Grand celebration of 'Vagarth-2025' by Sanskrit dept at Maitreyi College

TSN/New Delhi

The Department of Sanskrit at Maitreyi College, University of Delhi, hosted its annual academic festival Vagarth-2025 with great fervor and scholarly enthusiasm. The event, marked by cultural dignity and intellectual vigor, witnessed an impressive turnout of students, faculty members, and eminent scholars from across the academic fraternity.

The celebration commenced with traditional Vedic chants and the ceremonial lighting of the lamp. Principal Prof. Haritma Chopra inaugurated the event, extending a warm welcome to the esteemed guests and participants. In her address, she emphasized the timeless relevance of Sanskrit and praised the enthusiastic participation of students from various colleges.

The academic highlight of the event was a keynote lecture by Dr. Arun Kumar Mishra, Vedic scholar and Associate Professor at the University of Delhi. He delivered an insightful discourse on the theme Navaratri Mahatmya, delving into its Vedic roots and cultural significance. Dr. Mishra elucidated the importance of the four Navaratris observed annually and their spiritual connotations.

Adding further depth to the discussions, renowned scholar Dr. Rajmangal Yadav interpreted modern Sanskrit poetry in the context of Navaratri, presenting its spiritual and cultural reflections. Dr. Awadhesh Kumar, member of the IGNOU Academic Council and a respected grammarian, offered a scientific perspective on the festival, highlighting its role in fostering self-discipline, inner purification, and introspection. The program was ably compered by students Chhavi and Jahnavi, while faculty members Dr. Dharmendra Kumar, Dr. Hemlata Rani, and Dr. Vedvardhan introduced the distinguished speakers. In the valedictory session, Dr. Pramod Kumar Singh, Head of Department and Deputy Dean of Students' Welfare, University of Delhi, expressed his gratitude to all contributors and lauded the department's efforts in organizing a successful and impactful event.

As part of the Vagarth Mahotsav, three key competitions — Mantra Recitation, Quiz, and Art Presentation (Chitrakarma) — were organized, drawing enthusiastic participation from colleges across Delhi University.

In the Mantra Recitation competition, Dheeraj (Hansraj College) won first prize, followed by Varnika (Maitreyi College), Ayushi Singh (Hindu College), and Aryesh (St. Stephen's College). The Quiz competition saw Aryesh secure first place, Sneha Pandey second, and Ayushi third. In the Art Presentation, Ruchika (Commerce Department) won first prize, with Anjali Singh (BA Programme) securing second, while Sarika and Daya Gaur (Sanskrit Department) took third and fourth place respectively.

The day-long celebration left a profound impression on attendees, with its rich thematic content and culturally resonant presentations. The event successfully showcased the enduring legacy of Sanskrit while promoting holistic student development. Vagarth-2025 stood out as a memorable confluence of heritage, knowledge, and youthful enthusiasm.

वागर्थ वार्षिकोत्सव न केवल भाषा और परंपरा का उत्सव बना, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरणादायक भी रहा

मैत्रेयी महाविद्यालय में संस्कृत विभागीय वार्षिकोत्सव वागर्थ-2025 का हुआ भव्य आयोजन

नइ दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा वार्षिक उत्सव वागर्थ-2025 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंगलाचरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें समस्त अतिथियों एवं प्रतिभागियों की उपस्थिति ने आयोजन को सजीवता प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने की, जिन्होंने अपने स्वागत भाषण में समस्त आमंत्रित अतिथियों, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का अभिनंदन करते हुए संस्कृत भाषा की सांस्कृतिक निरंतरता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों से आए विद्यार्थियों के उत्साह को प्रेरणास्पद बताते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर वैदिक साहित्य, व्याकरण एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य के ख्यातिप्राप्त विद्वानों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष आयाम प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान वैदिक विद्वान एवं पुराणशास्त्र मर्मज्ञ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के सहाचार्य डॉ. अरुण कुमार मिश्र ने नवरात्र-महात्म्य विषयक व्याख्यान में भारतीय संस्कृति में नवरात्रों की वैदिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने बताया कि वर्ष में चार नवरात्र होते हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना विशेष आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। वहीं, संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. राजमंगल यादव ने आधुनिक संस्कृत काव्यपरम्परा में नवरात्र से संबंधित उद्धरण प्रस्तुत करते हुए उसके आध्यात्मिक व सांस्कृतिक अर्थों को रेखांकित किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में इग्नू के विद्वत्परिषद सदस्य एवं प्रखर व्याकरणाचार्य डॉ. अवधेश कुमार ने नवरात्रों के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये व्रत आंतरिक शुद्धि, आत्मनिरीक्षण तथा आत्मानुशासन का परिचायक हैं। कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व संस्कृत विभागीय छात्राएं छवि एवं जाह्नवी ने कुशलतापूर्वक निभाया, जबकि डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. हेमलता रानी एवं डॉ. वेदवर्धन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आयोजन को सफल बनाने हेतु विभागीय टीम की सराहना की। वागर्थ महोत्सव के तहत मंत्रपाठ, प्रश्नमंच एवं चित्रकर्म नामक तीन प्रमुख प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मंत्रपाठ प्रतियोगिता में हंसराज कॉलेज के धीरज ने प्रथम, मैत्रेयी महाविद्यालय की वर्णिका ने द्वितीय, हिंदू कॉलेज की आयुषी सिंह ने तृतीय तथा स्टीफेंस कॉलेज के आर्येष ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। प्रश्नमंच प्रतियोगिता में आर्येष, स्नेहा पाण्डेय और आयुषी क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। चित्रकर्म प्रतियोगिता में वाणिज्य विभाग की रुचिका को प्रथम, बीए. प्रोग्राम विभाग की छात्रा अंजलि सिंह को द्वितीय, संस्कृत विभाग की छात्राएं सारिका को तृतीय तथा दया गौर को चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त हुआ। पूरे कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता, विषयवस्तु की गहनता तथा आयोजन की संस्कृति-संवेदनशीलता ने उपस्थित श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया। संस्कृत विभाग की ओर से प्रस्तुत यह सांस्कृतिक समागम न केवल भाषा और परंपरा का उत्सव बना, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से भी अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ, जिसमें संस्कृत विभागीय शिक्षकों के अलावा बड़ी संख्या में मैत्रेयी महाविद्यालय एवं विभिन्न संस्थाओं से आगत छात्र-छात्राओं ने सोत्साह प्रतिभाग किया।

मैत्रेयी कॉलेज के संस्कृत विभाग में वार्षिकोत्सव वागर्थ आयोजित

नई दिल्ली (एसएनबी)। दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मैत्रेयी कॉलेज के संस्कृत विभाग में वार्षिक उत्सव वागर्थ 2025 का आयोजन अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज की प्राचार्य प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने की। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने समस्त आमंत्रित अतिथियों, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का अभिनंदन करते हुए संस्कृत भाषा की सांस्कृतिक निरंतरता पर प्रकाश डाला।

■ व्रत आंतरिक शुद्धि, आत्मनिरीक्षण व आत्मानुशासन का परिचायक

उन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों से आए विद्यार्थियों के उत्साह को प्रेरणास्पद बताते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान वैदिक विद्वान एवं पुराणशास्त्र मर्मज्ञ व दिल्ली विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ. अरुण कुमार मिश्र ने 'नवरात्र-महात्म्य' विषयक व्याख्यान में भारतीय संस्कृति में नवरात्र की वैदिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि की विस्तृत विवेचन की। उन्होंने बताया कि वर्ष में चार नवरात्र होते हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना विशेष आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। वहीं, संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. राजमंगल यादव ने आधुनिक संस्कृत काव्यपरम्परा में नवरात्र से संबंधित उद्धरण प्रस्तुत करते हुए उसके आध्यात्मिक व सांस्कृतिक अर्थों को रेखांकित किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में इग्नू के विद्वत परिषद् सदस्य एवं प्रखर व्याकरणाचार्य डॉ. अवधेश कुमार ने नवरात्रों के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये व्रत आंतरिक शुद्धि, आत्मनिरीक्षण व आत्मानुशासन का परिचायक हैं।

कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व संस्कृत विभागीय छात्राओं छवि एवं जानवी ने कुशलतापूर्वक निभाया। समापन सत्र में विभाग अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आयोजन को सफल बनाने के लिए विभागीय टीम की सराहना की।

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त नाम **जय प्रकाश महतो पुत्र:** हरि नारायन महतो **पता:** गाँव बलुआहा जिला सीतामढ़ी पी.एस सोनबरसा, बिहार, ने **FIR No. 64/15, U/s 420/34/411 IPC थाना: राजौरी गार्डन दिल्ली,** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **जय प्रकाश महतो** मिल नहीं रहा हैं और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **जय प्रकाश महतो** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा हैं)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 64/15, U/s 420/34/411 IPC थाना: राजौरी गार्डन दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **जय प्रकाश महतो** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **23.05.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
श्री शशांक नंदन भट्ट
एलडी. जेएमएफसी–02 कमरा नंबर 356
तीस हजारी कोर्ट दिल्ली

DP/4504/WD/2025
(Court Matter)

निविदा सूचना संख्या. सीओएन/2024/दिसंबर/01 तारीख: 19-12-2024 के विपरीत संशोधनी-12

निविदा संख्या. सौई/सीओएन/एलटीडी/ईपीसी/2024/05 के विपरीत संशोधनी-12 जारी की गई है। विस्तृत जानकारी के लिए कृपया www.ireps.gov.in में अवलोकन करें।

मुख्य अभियंता/सीओएन/लामडिंग
प्रोजेक्ट/मालीगाँव
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
(निर्माण संस्था)

CUB

सि
प्रशासनिक कार्यालय
ई–मेल आईडी : crmd@c

सरफासी ऐक्ट के तहत
सिटी यूनियन बैंक लिमिटेड में बंधक निम्नलिखित ऋणशारि, आगे ब्याज और खर्चों बैंक को किसी अन ऐक्ट, 2002 के तहत, प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमाव

मैत्रेयी महाविद्यालय में संस्कृत विभागीय वार्षिकोत्सव वागर्थ-2025 का भव्य आयोजन

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा वार्षिक उत्सव वागर्थ-2025 का आयोजन अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंगलाचरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें समस्त अतिथियों एवं प्रतिभागियों की उपस्थिति ने आयोजन को सजीवता प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने की, जिन्होंने अपने स्वागत भाषण में समस्त आमंत्रित अतिथियों, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का अभिनंदन करते हुए संस्कृत भाषा की सांस्कृतिक निरंतरता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों से आए विद्यार्थियों के उत्साह को प्रेरणास्पद बताते हुए उन्हें शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर वैदिक साहित्य, व्याकरण एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य के ख्यातिप्राप्त विद्वानों की

उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष आयाम प्रदान किया। मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान वैदिक विद्वान एवं पुराणशास्त्र मर्मज्ञ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के सहाचार्य डॉ. अरुण कुमार मिश्र ने नवरात्र-महात्म्य विषयक व्याख्यान में भारतीय संस्कृति में नवरात्रों की वैदिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने बताया कि वर्ष में चार नवरात्र होते हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना विशेष आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। वहीं, संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. राजमंगल यादव ने आधुनिक संस्कृत काव्यपरम्परा में नवरात्र से संबंधित उद्धरण प्रस्तुत करते हुए उसके आध्यात्मिक व सांस्कृतिक अर्थों को रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में इग्नू के विद्वत्परिषद् सदस्य एवं प्रखर व्याकरणाचार्य डॉ. अवधेश कुमार ने नवरात्रों के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ये व्रत आंतरिक शुद्धि, आत्मनिर-ीक्षण तथा आत्मानुशासन का परिचायक हैं। कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व संस्कृत विभागीय छात्राएं छवि एवं जाह्नवी ने कुशलतापूर्वक निभाया, जबकि डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. हेमलता रानी एवं डॉ. वेदवर्धन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। समापन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आयोजन को सफल बनाने हेतु विभागीय टीम की सराहना की। वागर्थ महोत्सव के अंतर्गत मन्त्रपाठ, प्रश्नमंच एवं चित्रकर्म नामक तीन प्रमुख प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महा-विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मन्त्रपाठ प्रतियोगिता में हंसराज कॉलेज के धीरज ने प्रथम, मैत्रेयी महाविद्यालय की वर्णिका ने द्वितीय, हिन्दू कॉलेज की आयुषी सिंह ने तृतीय तथा स्टीफेंस कॉलेज के आर्येष ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। प्रश्नमंच प्रतियोगिता में आर्येष, स्नेहा पाण्डेय और आयुषी क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। चित्रकर्म प्रतियोगिता में वाणिज्य विभाग की रुचिका को प्रथम, बीए. प्रोग्राम विभाग की छात्रा अंजलि सिंह को द्वितीय, संस्कृत विभाग की छात्राएं सारिका को तृतीय तथा दया गौर को चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त हुआ। पूरे कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता, विषयवस्तु की गहनता तथा आयोजन की संस्कृति-संवेदनशीलता ने उपस्थित श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया। संस्कृत विभाग की ओर से प्रस्तुत यह सांस्कृतिक समागम न केवल भाषा और परंपरा का उत्सव बना, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से भी अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ, जिसमें संस्कृत विभागीय शिक्षकों के अलावा बड़ी संख्या में मैत्रेयी महा-विद्यालय एवं विभिन्न संस्थाओं से आगत छात्र-छात्राओं ने सोत्साह प्रतिभाग किया।